

निबन्ध

एक अध्यापिका होने के नाते मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग दूँ । अलग – अलग तकनीकों का इस्तेमाल करके उनके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करने में तत्पर रहूँ । हमें न केवल उन्हें शिक्षित करना है बल्कि जीवन में आई कठिनाइयों का सामना करने के लिए भी तैयार करना है । बालमन बहुत ही कोमल और कोरे कागज़ की तरह होता है जिस सांचे में डालो ढल जाएगा , जो रंग चढ़ाओ चढ़ जाएगा । कुछ छात्र बहुत ही तीव्र बुद्धि होते हैं तथा कुछ सामान्य । हमें सभी में सामंजस्य स्थापित करना होता है । मेरा मानना है कि अपने विद्यार्थियों को पूर्वजों द्वारा दिए गए पारिवारिक मूल्यों , परम्पराओं , धरोहर का महत्त्व समझाते हुए भविष्य के लिए तैयार करना चाहिए । चिड़ियों की तरह हवा में उड़ना और मछलियों की तरह पानी में तैरना सीखने के बाद अब हमें मनुष्य की तरह जमीन पर चलना भी सीखना है । मानव का दानव बन जाना उसकी पराजय है , मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मानव का मानव होना उसकी विजय है ।

अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में धर्म ,भावना , रीति – रिवाजों और परम्पराओं का बहुत अधिक महत्त्व रहा है । भारतीय समाज की संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति कही जाती है जबकि पाश्चात्य संस्कृति को भौतिक संस्कृति कहा जाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति धर्म प्रधान है इसलिए इसे अध्यात्म प्रधान भी कहा गया है परन्तु हम देखते हैं कि पारिवारिक मूल्यों , परम्पराओं का अक्षरण हो रहा है । पुरानी संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हो रहा है तथा पारिवारिक जीवन संघर्षपूर्ण और तनावपूर्ण हो गया है । लोग मुक्त होकर जीवन बिताना पसंद करते हैं । विवाह विच्छेद की संख्या में वृद्धि हुई है तथा आत्मीयता और संवेदनाओं का स्थान बनावटी और औपचारिक संबंधों ने लिया है । आदमी अब और अधिक एकाकी और स्वकेन्द्री बन गया है । आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय संस्कृति की परम्पराओं का संरक्षण किया जाए । पारम्परिकता आधुनिकता को आधार प्रधान करती है, उसे सूखा और नीरस होने से बचाती है । मानवीय व्यवहार को एक सम्यक् अर्थ प्रदान करती है । परम्पराएँ हमें भारतीय होने का एहसास कराती हैं । हमारी संस्कृति जीवन को अधिक सरस रखने में योगदान करती है जिससे व्यक्ति की तरह जीवन जीया जा सकता है मशीन की तरह नहीं ।

भारत को विरासत में खुशहाल संस्कृति मिली है जिस पर भारतवासियों को गर्व होना चाहिए । संस्कृत ग्रंथों में कहा गया है “चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए क्योंकि धन तो आता है और चला जाता है एवं धन से क्षीण मनुष्य को क्षीण मनुष्य की संज्ञा

नहीं दी जा सकती किन्तु चरित्रहीन मनुष्य को हीन मनुष्य माना जाता है” । लगनशीलता और सत्यभाषण सच्चरित्रता की विशेषताएँ हैं ।

“उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ” प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है जीवन मूल्यों की रक्षा करना । हमें दया , करुणा , सहिष्णुता , सहानुभूति , प्रेम , लोक कल्याण , क्षमा , त्याग , तप भावनाओं को अपनाना होगा और ईर्ष्या, द्वेष , स्वार्थ आदि भावनाओं को छोड़ना होगा। आधुनिकता के प्रभाव ने मानव मूल्यों को और मानव संवेदनाओं को सोख लिया है । इसी मनतव्य के साथ हमें छात्रों को जीवन मूल्यों से सींचकर उनका पोषण करना होगा । अपनी इस किश्ती को साहिल तक पहुँचाना है , धरती के जो सूरज सोए हैं उन्हें जगाना है । इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा , सभी को इस यज्ञ में हवि डालनी होगी तभी सार्थक होगा हमारा प्रयास । विश्वास सफलता की नींव है ।

आओ हम सब मिलकर आशा के प्रदीप को जलाएँ ।

अनुपमा डागर

हिंदी अध्यापिका — प्राथमिक कक्षा

ऐमिटी इंटरनैशनल — 46